Vol. 11, Issue-1 (January 2022) pp.155-159 Sangeet Galaxy e-Journal [ISSN: 2319-9695]

UGC-CARE enlisted & Indexed in EBSCO International Database of Journals

रबींद्रनाथ टैगोर: 'गीतांजलि': भारतीय 'ध्वनि'

डॉ. अनीता शुक्ल
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग, कला संकाय
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात
Email: dr.anitashukla01@gmail.com

शोध सार

यह प्रपत्र रबींद्रनाथ टैगोर द्वारा रचित 'गीतांजलि' को उसके हिंदी तथा अंग्रेज़ी अनुवादों के माध्यम से समझने का प्रयास करता है तथा 'गीतांजलि' के नोबेल पुरस्कार पाने, पश्चिमी विद्वत् संसार में समझे और सराहे जाने के कारणों की भी पड़ताल करता है। प्रथम विश्वयुद्ध से भी कुछ पहले की लिखी गई 'गीतांजलि' की कविताओं की प्रथम विश्व युद्ध के समय में क्या भूमिका रही? वर्तमान समय में 'गीतांजलि' की क्या प्रासंगिकता है? इन प्रश्नों के उत्तर पाने का प्रयास भी मेरा यह प्रपत्र करता है, साथ ही भारतीय चिति की आध्यात्मिकता जो वैदिक साहित्य से लेकर लौकिक साहित्य तक में देखी जाती है, 'गीतांजलि' में उनके सादृश्य भी तलाशता है।

महत्वपूर्ण शब्द: *गीतांजलि, अनुवाद, प्रथम विश्व-युद्ध, गीतांजलि की प्रासंगिकता- तब और अब, भारतीय चिति, अध्यात्म, वेद-लोक-गीतांजलि।*

प्रो. सुभाष काक[1] एक साक्षात्कार में कहते हैं – 'भारतीय कविता तब विश्व स्तर की हो जाएगी जब यह अपनी ध्वनि पाएगी.' अपनी ध्वनि का संदर्भ यहाँ भारतीय काव्यशास्त्र के ध्वनि सिद्धांत से है.

7 मई सन् 1861 ई. को बंगाल के एक संपन्न घराने में जन्में गुरुदेव रबींद्रनाथ टैगोर का जीवन-दर्शन भारतीयता को अपनी समग्रता में समेटे हुए है। 'गीतांजलि' की कविताएँ भी कहीं कबीर के रहस्यवाद से प्रभावित लगती हैं तो कहीं वेद-उपनिषद की छाया का आभास होता है। वे मानवता के असीम पुजारी थे और संभवत: इसीलिए 'गीतांजलि' की सरसता, सरलता और आध्यात्मिकता ने पश्चिम की मानवता को भी झकझोर दिया।

'गीतांजलि' के अंग्रेजी संस्करण के परिचय में डब्ल्यू बी यीट्स लिखते हैं – 'रबींद्रनाथ टैगोर के इस गद्यानुवाद ने मेरी शिराओं में दौड़ रहे रक्त को जिस तरह झकझोर दिया है, उस तरह पिछले कई वर्षों में किसी ने नहीं किया. मुझे नहीं पता वे कौन से विचार थे जिन्होंने उनसे यह लिखवा लिया. मैं उनके जीवन के बारे में कुछ नहीं जानता यदि एक भारतीय यात्री मुझे न बताता.'[2] वे आगे कहते हैं कि मैं रबींद्रनाथ को प्रतिदिन पढ़ता हूँ, उनकी एक पंक्ति को पढ़ना यानी संसार के तमाम कष्टों को भूल जाना है. तो ऐसा क्या लिख दिया 'गीतांजलि' में गुरुदेव रबींद्रनाथ टैगोर ने कि जिसने यीट्स को झकझोर दिया.

उत्तर ढूँढ़ने के लिए हमें भारत की ज्ञान परंपरा की पड़ताल करनी होगी. भारत की ज्ञान परंपरा वेदों और उपनिषदों से नि:सृत है. जो हजारों वर्षों से भारतीय ज्ञान, दर्शन, अध्यात्म, धर्म आदि को श्रुति-स्मृति परंपरा में अक्षुण्ण रखे हुए है. 'गीतांजलि' उसी परंपरा की एक कड़ी है, या यूँ कहें कि वह भारतीय ध्वनि है जो विश्व स्तर पर सराही गई. यह टैगोर द्वारा अपने आराध्य को दी गई गीतों की 'अंजलि' है, नैवेद्य है.

प्रत्येक कार्य का कोई न कोई कारण होता है. इस चराचर जगत में कुछ भी अकारण नहीं है. 'गीतांजलि' का सृजन भी अकारण नहीं है और इसे नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया जाना भी अकारण नहीं है. 'गीताजलि' पर बात आरंभ करने से पहले मैं इस दौरान हुए अपने कुछ अनुभवों की तरफ आप सभी का ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगी.

अनुवाद की स्थिति:

मैंने जब 'गीतांजलि' पर लिखने का निर्णय लिया तो सोचा कि मैं इसके हिंदी अनुवाद को पढ़कर समझना चाहूँगी, उसे ही आधार बनाऊँगी. ढूँढ़ने पर पता चला कि हिंदी में 'गीतांजलि' के कई अनुवाद उपलब्ध हैं. जानकर प्रसन्नता हुई. मैंने एक प्रति, जो कि प्रदीप पंडित तथा पुष्पा गोयल द्वारा अनूदित तथा डायमंड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली से प्रकाशित है, मँगवा ली. किंतु अनुवाद की जिस दयनीय स्थिति की तरफ मैं आप सभी का ध्यान आकृष्ट करना चाहती हूँ उसे आप इस हिंदी के संकलन की पहली कविता का एक अंश सुनकर स्वत: अनुमान लगा लेंगे –

'अपने कार्यों में न करूँ
मैं आत्म प्रचार, प्रचार प्रभु!
अपनी इच्छा पूर्ण करो तुम
मेरे ही जीवन में.'[3]

अनुवाद की स्तरीयता प्रस्तुत उदाहरण में देखी जा सकती है. कुछ और कविताएँ पढ़ते हुए मन में यह भी सवाल आया कि – यह है 'गीतांजलि', जिसे नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था?! इसे आगे पढ़ना जब संभव न हुआ तो मैंने दूसरे पाठ भी इंटरनेट से देखने का प्रयास किया, पता चला इसके अंग्रेज़ी-हिंदी में कई पाठ उपलब्ध हैं, किंतु उनमें कविताओं का संकलन एक-दूसरे से काफी भिन्न है. "जैसे अंग्रेज़ी 'गीतांजलि' बिल्कुल वही नहीं है, जो बांग्ला है. विश्वभारती की बांग्ला 'गीतांजलि' में साफ है कि अंग्रेज़ी 'गीतांजलि' में इसकी मात्र 53 कविताएँ ली गई हैं. बांग्ला में अंग्रेज़ी की सर्वाधिक चर्चित कविता 'Where the mind is without fear…' है ही नहीं." बांग्ला मेरे लिए संभव नहीं था इसलिए मैंने 'गीतांजलि' के अंग्रेज़ी अनुवाद से संदर्भ लिए और अब मैं उन्हीं कुछ संदर्भों के आधार पर अपनी बात कहूँगी.

प्रासंगिकता:

प्रश्न है वर्तमान समय में 'गीतांजलि' की प्रासंगिकता का, इसलिए मैं उस समय 'गीतांजलि' की प्रासंगिकता से बात आरंभ करूँगी जिस समय वह लिखी गई; जबकि मैं पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हूँ कि जिन कविताओं के संकलन को मैं 'गीतांजलि' समझ रही हूँ वे ही कविताएँ मूल बांग्ला में भी रही होंगी.

सन् 1913 में टैगोर को नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है 'गीतांजलि' के लिए, अत: यह तो निश्चित है कि ये कविताएँ सन् 1913 के कुछ पहले की हो सकती हैं. सन् 1914 में प्रथम विश्वयुद्ध होता है लेकिन उसकी भूमिका भी कई वर्ष पहले से बन रही होगी. कारण कुछ भी हो – साराजीवो का हत्याकाण्ड, राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों के हितों में टकराव, बड़े यूरोपीय देशों का दो शिविरों में विभाजन, सैन्यवाद अथवा व्यापारिक तथा औपनिवेशिक प्रतिद्वंद्विता या कुछ और. इन कारणों पर इतिहासकार और राजनीतिज्ञ चिंतन करें; किंतु एक भारतीय कवि, भारत की प्राचीन ज्ञान-विज्ञान परंपरा का सत्व निचोड़कर अपनी कविताओं में भरकर लाता है और विश्वशांति, प्रेम, भाईचारा, मानवता तथा एकता का संदेश देता है बिल्कुल वही जो हमारे ऋषि-मुनियों ने वेदों-उपनिषदों में कहा है तथा आज भी भारतीय मति, भारतीय चिति तथा भारतीय विचार प्रणाली उसी संदेश को दोहराती आ रही है. आज जबकि विश्व आतंकवाद की समस्या से तथा अन्य कई राजनीतिक, आर्थिक संकटों से जूझ रहा है, ऐसे में 'गीतांजलि' की प्रासंगिकता स्वयंमेव साकार हो उठती है. यह भी ध्यान रखने की बात है कि जब 'गीतांजलि' लिखी गई उस समय हमारा देश अंग्रेज़ों का गुलाम था. टैगोर विश्व कवि थे. वे द्रष्टा थे. वे ईश्वर से प्रार्थना करते हैं –

Where the mind is without fear
and the head is held high;
Where knowledge is free;
Where the world has not been
broken up into fragments
by narrow domestic walls;
where the mind is led forward by thee
into ever-widening thought and action-
Into that heaven of freedom,
my father, let my country awake.[4]

कवि दूरद्रष्टा होता है, उसकी अभिव्यक्तियाँ शाश्वत होती हैं. वह कभी अप्रासंगिक नहीं होता. क्या आज ये पंक्तियाँ संदर्भहीन लगती हैं कि -

Where the world has not been
broken up into fragments
by narrow domestic walls;

और कितने विभाजन? कितनी दीवारें? धर्म की, सांप्रदायिकता की, जाति की, वर्ग की, लिंग की..... कितनी दीवारें उठाई जानी बाकी हैं मनुष्य-मनुष्य के बीच. उन्हीं मनुष्यों के बीच जो उसी एक परमात्मा का अंश है –

ॐ ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किन्च जगत्यां जगत्.
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्..

दर्शन

भारतीय ऋषि-मुनियों ने स्वयं को द्रष्टा कहा है. उन्होंने जो देखा, अनुभव किया, वही अभिव्यक्त किया. ईशोपनिषद के पहले मंत्र 'ॐ ईशावास्यमिदं सर्वं....' का सार है कि जड़-चेतन प्राणियों वाली यह समस्त सृष्टि परमात्मा से व्याप्त है. मनुष्य इसके पदार्थों का आवश्यकतानुसार भोग करे, परंतु 'यह सब मेरा नहीं है के भाव के साथ'. उनका संग्रह न करे. 'गीतांजलि' के लगभग सभी गीतों का भी, जो ईश्वर को समर्पित हैं, यही सार है –

The same stream of life that runs through
my veins night and day runs through the world
and dances in rhythmic measures.[5] अथवा
The light of thy music
illuminates the world.[6]

इस पृथ्वी पर जो कुछ भी गतिशील है, उस सब में तुम ही हो. शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन का सार यही है कि –

- ब्रह्म और जीव मूलत: और तत्वत: एक हैं. हमें जो भी अंतर नज़र आता है उसका कारण अज्ञान है.
- जीव की मुक्ति के लिए ज्ञान आवश्यक है.
- जीव की मुक्ति ब्रह्म में लीन हो जाने में है.

शंकराचार्य ने जिस समन्वयवाद का प्रचार करते हुए सनातन हिंदू धर्म को पुन: स्थापित एवं प्रतिष्ठित किया, 'गीतांजलि' के गीत उसी दर्शन की प्रतिच्छाया प्रतीत होते हैं. शंकराचार्य मानते हैं कि संसार में ब्रह्म ही सत्य है, बाकी सब मिथ्या है (ब्रह्म सत्यं, जगत

मिथ्या). जीव केवल अज्ञान के कारण ही ब्रह्म को नहीं जान पाता जबकि ब्रह्म तो उसके अंदर ही विराजमान है. वल्लभाचार्य अपने शुद्धाद्वैत दर्शन में ब्रह्म, जीव और जगत, तीनों को सत्य मानते हैं. 'गीतांजलि' के पाठक ने इसी सत्य की अनुभूति इन गीतों के माध्यम से किया, जो टैगोर का भी अनुभूत सत्य है. वे कहते हैं –

I have not seen his face,
nor have I listened to his voice;
only I have heard his gentle footsteps
from the road before my house.[7]

कबीर ने भी कहा –

जाके मुँह माथा नहीं, नाहीं रूप कुरूप.

इस पर भी ध्यान देने की बात है कि जब टैगोर अपनी कविताओं में freedom, liberation आदि शब्दों का प्रयोग करते हैं तो किससे freedom और किस liberation की बात करते हैं? उनका freedom भौतिकता, सांसारिकता, लौकिकता से मुक्त होकर 'स्व', 'आत्म' के परमात्म से जुड़ने में है. उनका liberation जीवन – मुक्त होने में है. जीवन – मुक्ति उस सत्य के ज्ञान में है जो हमें ब्रह्माण्ड का हमारे शरीर, मन और प्राण-बल के योग में निहित होने का आभास कराता है. कुछ उसी तरह का योग जिसकी बात महर्षि अरविंद ने 'Integral Yoga' में की है.

'गीतांजलि' असीम प्रेम की अनुभूति का काव्य है. अज्ञान से ज्ञान की तरफ जाने का काव्य है. टैगोर यहाँ अंधकार से प्रकाश की तरफ जाने की बात करते हैं – 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' और उन्हें पूरा विश्वास है कि –

The morning will surely come,
The darkness will vanish.[8]

वे अपनी जीवन-यात्रा का लक्ष्य उस परमसत्ता में लीन होने में मानते हैं, जो कहीं बाहर नहीं है हमारे भीतर है –

The traveler has to knock at every alien door
to come to his own,
and one has to wander through
all the outer worlds to reach the
inner most shrine at the end.[9]

मनुष्य को सब कुछ परमात्मा ने दिया और देकर भी वह खाली नहीं हुआ, पूर्ण ही रहा –

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते.
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते..

वही कबीर का अनुभूत सत्य – 'कस्तूरी कुण्डलि बसै, मृग ढूँढ़ै बन मांहि. तैसे घट घट राम हैं, दुनिया देखे नांहि.' व्यक्ति अपने भीतर नहीं झाँकता बस बाहर ढूँढ़ता फिरता है. कश्मीरी संत कवयित्री ललद्यद कहती हैं – 'ज्ञानी है तो स्वयं को जान, यही है साहिब से पहिचान.' उत्तर से दक्षिण तक एक ही ध्वनि. सारे बाह्य व्यापार अंतर की ओर ही ले जाते हैं. अंतर से पहिचान ही साहिब से पहचान कराती है. और जब सब उसी 'एक' का अंश हैं तो प्राणिमात्र में कोई भेद नहीं है. चराचर जगत के सभी जीव एक सूत्र में बँधे हैं. यह बंधन देश काल की सीमाओं को तोड़कर आत्माओं को जोड़ता है.

सबमें ईश्वर है और उसके सबमें होने से ही मेरे लिए कोई पराया नहीं है. जिसने ईश्वर को जान लिया, ईश्वर के होने को जान लिया, उसके लिए कोई पराया हो ही नहीं सकता –

When one knows thee,
then alien there is none,
then no door is shut.
Oh, grant me my prayer that I may never lose
the bliss of the touch of the one in the play of many.[10]

'गीतांजलि' न तो महज प्रार्थना है और न ही अभिव्यक्ति, बल्कि यह अनुभूति है. पढ़ते-पढ़ते ऐसा लगता है जैसे यह ईश्वर से संवाद है, प्रकृति से संवाद है, सर्वशक्तिमान से एकाकार हो जाने की अनुभूति है. यह प्रार्थना भी है और संवाद भी.

कुछ कविताएँ तो निश्चित रूप से विभक्त विश्व को भेदभाव मिटाने का संदेश देती हैं, किंतु अधिकांश कविताएँ पाठक को उस दार्शनिक भावभूमि पर ले जाती हैं जो प्राचीन भारतीय ग्रंथों, ऋषि-मुनियों की वाणी तथा मध्यकालीन भारतीय संतों की वाणी में अनुभव की जाती हैं.

Thou art the sky and
thou art the nest as well.[11]

विराट में भी तुम हो, सूक्ष्म में भी तुम हो. एक छायावादी कवि की तरह कवि ईश्वर की कला पर आश्चर्य भी व्यक्त करता है –

I was tired and sleeping on my idle bed
and imagined all work has ceased.
In the morning I woke up and found my garden
full with wonders of flowers.[12]

निष्कर्ष:

टैगोर का यह अनुभूत सत्य, वह गतिमयता, ऊर्जा, जिसका अनुभव वे स्वयं करते हैं; यही भारतीय दर्शन की विशेषता है, और यही सभी द्रष्टा कवि, ऋषि-मनीषि, चिंतक अपने-अपने ढंग से कहते हैं; चाहे वे शंकराचार्य हों, रामानुजाचार्य हों, महर्षि अरविंद हों अथवा भक्त-संत कवि. टैगोर ने इसी दर्शन को काव्य का रूप दिया है. टैगोर को पढ़ना, मात्र 'गीतांजलि' को पढ़ना ही उस भावसागर से गुजरना है, बल्कि उसमें डूबना है। 'गीतांजलि' अद्भुत कृति है। यह न तो कविता है और न ही 'गीतों की अंजलि'। यह अध्यात्म और दर्शन का सागर है। यह विशुद्ध भारतीय ध्वनि है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. 'Indian poetry will become world class only if it finds its own *dhvani.'* – *Subhash Kak*
2. 'Gitanjali' (Song Offerings) by Rabindranath Tagore with an introduction by W.B. Yeats, New York, The Macmillan Company, 1920 Edition (PDF version)
3. 'गीतांजलि'- संपादक – प्रदीप पंडित एवं पुष्पा गोयल, डायमंड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली

(4-10) http://www.spiritualbee.com/media/gitanjali-by-tagore.pdf

आधार ग्रंथ: Isha Upanishad' with the commentary of Shankaracharya, Transleted by Swami Gambhiranand, Advaita Ashrama, Calcutta.